शिष्यता के अनिवार्य तत्व

# अध्याय अनिवार्यताएँ

## आत्मिक वरदान

अध्याय 4: दृढ़ बनाने वाले वरदान

सारे आत्मिक वरदान परमेश्वर के चरित्र के किसी पहलू को प्रकट करते हैं परन्तु दृढ़ बनाने वाले वरदान कई अर्थों में परमेश्वर के लिए बोलने और उसकी ओर से कार्य करने वाले प्रतीत होते हैं। गलत तरीके से प्रयोग करने या नकल करने से ये वरदान कलीसिया में असमंजस का कारण बन सकते हैं। परन्तु प्रेम के साथ उचित रूप से प्रयोग किए जाने पर दृढ़ बनाने वाले वरदान सामर्थी तरीकों से कलीसिया को बना सकते हैं।

वचन हमें सिखाता है कि ऐसे समय आएँगे जब प्रभु अपने लोगों को निर्बल बनाता है ताकि वे अपनी निर्बलता में उसकी सामर्थ को सिद्ध होते हुए देख सकें। (2 कुरिन्थियों 12:9) कई बार वह व्यक्तियों या कलीसिया के आत्मिक वरदानों के प्रयोग द्वारा अपने लोगों को दृढ़ बनाकर अपनी सामर्थ का प्रदर्शन करता है।

कलीसिया के सदस्यों के रूप में हम जानते हैं कि ऐसे समय आते हैं जब हमारी मण्डली में कोई व्यक्ति या पूरी कलीसिया अत्यधिक कठिन समय से गुजरती है–एक निर्बलता का समय–जब उन्हें बल देने की आवश्यकता होती है। मण्डली के सारे सदस्यों से यह अपेक्षित है कि निर्माण करने और दृढ़ता देने में अपने हिस्से को पूरा करें परन्तु कलीसिया में कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें दृढ़ बनाने वाले वरदानों का विशेष वरदान प्राप्त होता है।

रोमियों 14:19 हमें शान्ति और परस्पर उन्नति का पीछा करने का प्रोत्साहन देता है। इसी प्रकार, यशायाह भविष्यद्वक्ता अपने पाठक से विनती करता है, "ढीले हाथों को दृढ़ करो और थरथराते हुए घुटनों को स्थिर करो। घबराने वालों से कहो, 'हियाब बाँधो, मत डरो।'" (यशायाह 35:3–4) कलीसिया के सदस्यों के रूप में हम जानते हैं कि ऐसे समय आते हैं जब हमारी मण्डली में कोई व्यक्ति या पूरी कलीसिया अत्यधिक कठिन समय से गुजरती है–एक निर्बलता का समय–जब उन्हें बल देने की आवश्यकता होती है। मण्डली के सारे सदस्यों से यह अपेक्षित है कि निर्माण करने और दृढ़ता देने में अपने हिस्से को पूरा करें परन्तु कलीसिया में कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें दृढ़ बनाने वाले वरदानों का विशेष वरदान प्राप्त होता है।

दृढ़ बनाने वाले वरदान विश्वास को बनाते हैं, परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम को बढ़ाते हैं और हमें निरन्तर परमेश्वर के अनुग्रह का स्मरण दिलाते हैं। जब ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रह्माण्ड का परमेश्वर दूर है, उसे छूआ नहीं जा सकता, उसे समझा नहीं जा सकता तब दृढ़ बनाने वाले वरदान परमेश्वर के स्वभाव को अधिक दृश्य, निकट और साकार रूप में प्रकट करते हैं। ये वरदान अक्सर साधारण लोगों के जीवनों द्वारा अलौकिक कार्यों को करने की परमेश्वर की असाधारण सामर्थ का प्रदर्शन करते हैं।

दृढ़ बनाने वाले वरदानों को उनके विशिष्ट प्रकटीकरणों में विभाजित करने से कलीसिया और अपने आप में उनकी पहचान करने एवं वरदानों के विभिन्न प्रयोगों को देखने में हमें सहायता मिलेगी।

प्रोत्साहन– इस वरदान वाले लोग दूसरों की चोट और दर्द को महसूस कर सकते हैं और चोटिल हृदयों के लिए आशा के वचन बोल सकते हैं। उनमें उदास लोगों में 'जीवन बोलने' और उन्हें आनन्द की प्रेरणा देने की क्षमता है। आप देखेंगे कि प्रोत्साहन के वरदान वाले लोग अस्पताल में बीमारों से मिलने की सेवकाईयों की ओर आकर्षित होते हैं या हो सकता है कि वे किसी को आनन्दित करने के लिए निरन्तर पत्र भेजें। इस वरदान में सामना करने के भय से सावधान रहने की आवश्यकता है। प्रभु के वचनों से सांत्वना देने और तरस खाने वाले व्यक्ति को प्रेम में बोलने या मसीह में किसी भाई या बहन को डाँटने में समर्थ होने में परेशानी हो सकती है। उचित रीति से किए जाने पर प्रोत्साहन पाने वाला व्यक्ति बता सकता है कि शब्द केवल चापलूसी से भरे या 'अच्छे शब्द' ही नहीं थे परन्तु वे बाइबल के सत्य थे जिन्हें इस प्रकार से एक विशिष्ट परिस्थिति पर लागू किया गया था जिससे नई आशा मिलती है।

चंगाई– पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने शारीरिक रोगों वाले बहुत से व्यक्ति को तुरन्त चंगाई दी थी। परन्तु चंगाई की सेवकाई का आरम्भ नये नियम के समयों में नहीं हुआ था। पुराने नियम के कई भविष्यद्वक्ताओं ने भी लोगों को शारीरिक चंगाई दी थी। यीशु के कई चेलों में भी यह वरदान था। किसी व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने और उसे तुरन्त चंगा होते हुए देखने की योग्यता अद्वितीय एवं असाधारण है। परन्तु, कुछ लोग बीमारियों या शारीरिक निर्बलताओं की चंगाई में भाग लेने का दावा करते हैं। इस वरदान के संबंध सावधानी यह है कि व्यक्ति यह स्मरण रखे

कि प्रभु यीशु ही महान वैद्य है और केवल प्रभु ही चंगाई देता है। हमें यह भी स्मरण रखने की आवश्यकता है कि यीशु ने भी उसके सम्पर्क में आए प्रत्येक व्यक्ति को चंगाई नहीं दी, इसलिए जब हमारे प्रार्थना करने पर चंगाई नहीं होती है तो हमें धीरज नहीं खोना चाहिए।

परख– परख के आत्मिक वरदान के दो प्रकटीकरण हो सकते हैं। परख के वरदान वाले कुछ लोगों को बाइबल के सत्यों की इतनी विस्तृत जानकारी होती है कि वे कलीसिया में घुसने का प्रयास करने वाली किसी भी झूठी शिक्षा को जल्दी ही पहचानने और उसका खण्डन करने में समर्थ होते हैं। परन्तु कुछ लोग किसी व्यक्ति, स्थान या परिस्थिति में झूठी आत्माओं को पहचानने और महसूस करने में समर्थ होते हैं और वे दूसरे उपस्थित विश्वासियों को सतर्क कर सकते हैं। उनमें दुष्टात्माओं को पहचानने और उनका नाम लेकर उन्हें निकालने की योग्यता होती है। इस वरदान वाले लोगों को यह स्मरण रखते हुए नम्र बने रहने की आवश्यकता है कि केवल परमेश्वर ही वास्तव में अच्छाई और बुराई की परख कर सकता है और केवल परमेश्वर ही बुद्धि देता है। इस वरदान वाले लोगों को इस सत्य को भी स्मरण रखने और दृढ़ता से पकड़े रहने की आवश्यकता है कि मसीह ने अन्धकार पर जय पाई है और चाहे वे झूठ को कितना ही अधिक फैले हुए देखें, मसीह जय पा चुका है।

ज्ञान– ज्ञान का आत्मिक वरदान आरम्भ में परख के वरदान जैसा लगता है परन्तु यह झूठ का खण्डन करने की बजाय सत्य की घोषणा करने से अधिक संबंधित है। ज्ञान के वरदान वाले व्यक्तियों में पवित्रशास्त्र के सत्यों की पूर्ण समझ होती है, वचन की याददाश्त होती है, और उनमें बाइबल की कहानियों को श्रोताओं से जोड़ने और उन्हें बताने की योग्यता होती है। उनकी महानतम इच्छा सत्य बोलना और परमेश्वर के वचन का प्रचार और घोषणा करना है। इसमें सावधानी की एक बात यह है कि इसका प्रयोग सारे ज्ञान और बुद्धि के स्रोत के रूप में स्वयं को ऊँचा उठाने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, इस वरदान वाले व्यक्तियों को श्रोता के प्रति संवेदनशील होना चाहिए और यह ध्यान रखना चाहिए कि उनके ज्ञान का स्तर उनके सुनने वालों की समझ के अनुसार हो।

भविष्यद्वाणी– भविष्यद्वाणी के वरदान के दो रूप हो सकते हैं: भविष्यद्वाणी का एक पहलू 'बताना' है जो परमेश्वर द्वारा वचन में प्रकट की गई बात की घोषणा करता है। भविष्यद्वाणी का दूसरा पहलू 'भविष्य के बारे में बताना' है जो प्रभु द्वारा लोगों के लिए दिए गए नए वचन या विशिष्ट निर्देशों की घोषणा करता है। भविष्यद्वाणी एक उत्साहजनक वरदान प्रतीत होता है। विशेषतः भविष्य की बातों को बताने का भविष्यद्वाणी का पहलू अत्यधिक रोमांचक है क्योंकि मनुष्य सदैव अपने सवालों के उत्तर चाहता है और सदैव अपने भविष्य के बारे में जानना चाहता है। परन्तु भविष्यद्वाणी के वरदान वाले व्यक्ति और भविष्यद्वाणी के वरदान से सुनने की इच्छा रखने वाली कलीसिया दोनों को यह स्मरण रखना चाहिए कि कहे गए प्रत्येक वचन की पुष्टि पवित्रशास्त्र द्वारा होनी चाहिए और बोले गए किसी भी वचन का अधिकार परमेश्वर के त्रुटिहीन वचन से अधिक नहीं है।

इस वरदान वाले लोगों को यह स्मरण रखते हुए नम्र बने रहने की आवश्यकता है कि केवल परमेश्वर ही वास्तव में अच्छाई और बुराई की परख कर सकता है और केवल परमेश्वर ही बुद्धि देता है।

दृढ़ बनाने वाले वरदानों में दुरूपयोग या सनसनी की सबसे अधिक संभावना रहती है। परमेश्वर की सामर्थ अपने आप में ही इतनी चमत्कारी है कि हमें हमारे प्रयासों से उसकी महानता को बढ़ाने का प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं है।

रचनात्मक संवाद– चाहे कला, शब्दों, संगीत या नाटक के द्वारा हो, रचनात्मक संवाद परख, ज्ञान, भविष्यद्वाणी और दूसरे बहुत से चरवाही के वरदानों के लिए महत्वपूर्ण है जिनका मूल्यांकन अन्य अध्यायों में किया गया है। रचनात्मक संवाद यह सुनिश्चित करता है कि उपलब्ध विधियों के द्वारा परमेश्वर के वचन के सत्य का प्रसार हो। उनकी तीव्र लालसा परमेश्वर के वचन की घोषणा होते हुए देखना है और उनमें परमेश्वर के सन्देश को सुनाने के लिए अद्वितीय एवं अर्थपूर्ण तरीकों को खोजने का वरदान है।

किसी भी आत्मिक वरदान के समान दृढ़ बनाने वाले वरदानों के प्रयोग के साथ भी घमण्डी हो जाने का जोखिम है। प्रभु सदैव यह चाहता है कि उन सारे भले कार्यों की पूरी महिमा उसे मिले जिसे करने में वह हमें समर्थ बनाता है। इसके अतिरिक्त, दृढ़ बनाने वाले वरदानों में दुरूपयोग या सनसनी की सबसे अधिक संभावना रहती है। परमेश्वर की सामर्थ अपने आप में ही इतनी चमत्कारी है कि हमें हमारे प्रयासों से उसकी महानता को बढ़ाने का प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं है।

यदि आपके अन्दर या आपकी कलीसिया के किसी व्यक्ति में दृढ़ बनाने वाले वरदान हैं तो प्रार्थना करें कि परमेश्वर कलीसिया की आत्मिक उन्नति और उसके सदस्यों की बढ़ोतरी के लिए सामर्थ के साथ उनका प्रयोग करे।

## एक नजर में

- दृढ़ बनाने वाले वरदान प्रभु द्वारा अपने लोगों की आत्मिक उन्नति और मसीह की देह के निर्माण के लिए दिए जाते हैं।

- दृढ़ बनाने वाले वरदान प्रोत्साहन, चंगाई, परख, भविष्यद्वाणी, ज्ञान और रचनात्मक संवाद हैं।

- दृढ़ बनाने वाले प्रत्येक वरदान में सतर्कता की आवश्यकता है परन्तु उचित प्रयोग के द्वारा वे कलीसिया के स्वास्थ्य और बल में सामर्थी योगदान दे सकते हैं।

## आपका विचार

- क्या आपको किसी व्यक्ति में दृढ़ बनाने वाले वरदान के होने की जानकारी है? दृढ़ बनाने के वरदानों की सेवकाई से आपको किस प्रकार आशीष मिली है? इन वरदानों के प्रयोग द्वारा परमेश्वर ने जिस प्रकार आपको दृढ़ किया है उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।

- क्या आप स्वयं में इस आत्मिक वरदान को पहचानते हैं? यदि हाँ, तो प्रार्थना करें और प्रभु से यह प्रकट करने के लिए कहें कि आप किस प्रकार इस वरदान को सान सकते हैं और उसकी महिमा के लिए अपनी स्थानीय कलीसिया में इसका उचित प्रयोग कर सकते हैं।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing